प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)
हिन्दी पत्रकारिता दिवस पर पंतनगर में कार्यशाला आयोजित

पंतनगर। ३० मई २०१८। पंतनगर विश्वविद्यालय के कृषि संचार विभाग में आज हिन्दी पत्रकारिता दिवस पर एक दो-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. ए.के. मिश्रा ने की। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में निसकेयर (एनआईएससीएआईआर) के निदेशक, डा. मनोज पटेरिया; आईकॉन कम्यूनिकेशन संस्था के संस्थापक, श्री अनुपम श्रीवास्तव, एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री राजकुमार भारद्वाज, उपस्थित थे। कृषि महाविद्यालय के कार्यवाहक अधिष्ठाता, डा. डी.एस. पाण्डे, भी मंचासीन थे।

कुलपति, प्रो. ए.के. मिश्रा ने कहा कि आजादी के बाद हमारे पास भरपूर अनाज नही था, तब से अब तक सभी के प्रयासों से उत्पादन में कई गुना वृद्धि हुयी है, लेकिन किसानों की हालत अभी अच्छी नहीं है। इसके लिए कृषि विश्वविद्यालयें और कृषि संस्थानों द्वारा विकसित अच्छे बीज और तकनीकों को किसानों तक पहुंचाये जाने की आवश्यकता है, जिसमें हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका अहम है। विश्वविद्यालय ने कुछ प्रयास किये है लेकिन अभी भी वो काफी नहीं है। उन्होंने यह भी बताया कि किसान अपने उत्पाद का वह मूल्य प्राप्त नही कर पा रहा है, जो उसे मिलना चाहिए। इसके लिए उसे अपने उत्पाद का मूल्यवर्धन करना होगा। उन्होंने यह भी कहा कि मीडिया के द्वारा प्रस्तुत की गयी जानकारी सरल भाषा में होनी चाहिए। उन्होंने मीडिया को सचेत रहने की आवश्यकता बतायी, ताकि पत्रकार सही तथ्यों व जानकारी को किसान के सामने रखें जिसे वे अपना सकें।

डा. मनोज पटेरिया ने हिन्दी पत्रकारिता दिवस पर बधाई देते हुए कहा कि हमारे देश में अब सिर्फ १२ प्रतिशत लोग ही वास्तव में किसान हैं, जिनके पास खेती की भूमि है, जबकि खेतीहर मजदूर को मिलाकर यह प्रतिशत २१ हो जाता है। कुल ग्रामीण आबादी लगभग ७० प्रतिशत है। उन्होंने विज्ञान के संचार के लिए नवोन्मेषी तरीकों को अपनाये जाने की आवश्यकता बतायी तथा सरकारी समाचार पत्र प्रारम्भ किये जाने पर बल दिया। इससे पूर्व श्री राजकुमार भारद्वाज ने पंजाब की खेती के मॉडल को पश्चिम का अंधानुकरण बताते हुए मीडिया द्वारा सही स्थिति को उजागर करने की आवश्यकता बतायी। उन्होंने कहा कि बदलाव की शुरूआत विश्वविद्यालयों से ही होनी चाहिए। उन्होंने पंतनगर विश्वविद्यालय को एक बड़ा नाम बताते हुए कहा कि बीते हुए कल से आने वाले कल को कैसे सुन्दर बनाये इस पर मंथन करने की जरूरत है। डा. अनुपम श्रीवास्तव ने कहा कि समस्या का समाधान जितना सरल होगा उतना ही सतत होगा। उन्होंने बताया कि उपलब्ध साधनों का सही उपयोग करते हुए जानकारी को संभव क्षेत्र में पहुंचाने का प्रयास किया जाना चाहिए। छोटी शुरूआत ही आगे चलकर बड़ी हो पायेगी। कार्यवाहक अधिष्ठाता कृषि ने किसानों की छवि में परिवर्तन करने की आवश्यकता बतायी तथा इस बात पर बल दिया कि किसान को उनके उत्पाद का उचित मूल्य मिलना चाहिए।

कार्यक्रम में उपस्थित पूर्व विभागाध्यक्ष कृषि संचार विभाग, प्रो. आर.एन त्रिखा और डा. बी.बी. सिंह ने भी पत्रकारिता के अपने अनुभवों को साझा किया। इस अवसर पर हिन्दी भाषा में विज्ञान लेखन कर रहे वैज्ञानिकों को अतिथियों द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। उपस्थित अतिथियों को भी कुलपति द्वारा प्रतीक चिन्ह और शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन विभागाध्यक्ष कृषि संचार, डा. एस.के. कश्यप ने किया तथा अंत में धन्यवाद डा. एम.ए. अंसारी, प्राध्यापक, द्वारा किया गया।

कार्यशालय के उद्घाटन सत्र में संबोधित करते विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. ए.के. मिश्रा; साथ में मंचासीन वैज्ञानिक एवं अतिथि।